रजिस्ट्री सं० डी- 222

REGISTERED NO. D-222

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 36] नई दिल्ली, शनिवार, सितम्बर 9 (भाद्र 18, 1889)

No. 36] NEW DELHI, SATURDAY, SEPTEMBER 9, 1967 (BHADRA 18, 1889)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

नोटिस
NOTICE

नीचे लिखे भारत के असाधारण राजपत्र 22 अगस्त, 1967 तक प्रकाशित किये गये :—

The undermentioned *Gazettes of India Extraordinary* were published up to the 22nd August, 1967:—

अंक Issue No.	संख्या और तारीख No. and Date	द्वारा जारी किया गया Issued by	विषय Subject
117	No. 80-ITC (PN)/67 dated 16th August, 1967.	Min. of Commerce	Revalidation of import licences issued under the Erstwhile E.P. Schemes and the National Defence Remittance Scheme.
	No. 81-ITC(PN)/67 dated 16th August, 1967.	Do.	Import policy for Ball and Roller Bearings for the year April, 1967—March, 1968.
118	No. 82-ITC(PN)/67 dated 18th August 1967.	Do.	Import of raw materials, components and spares by actual users engaged in the industries other than priority industries in the small scale sector and also in the Non-SSI Sector sponsored by the State Directors of Industries.
119	No. 83-ITC(PN)/67 dated 19th August, 1967.	Do.	Import Policy for Registered Exporters for the year April, 1967—March 1968. Applicability to exports made from Kandla Free Trade Zone.
120	No. 84-ITC(PN)/67 dated 21st August, 1967.	Do.	Terms and conditions governing the issuance of licences for private sector imports from Japan under the sixth Year Credit (Non-Project).
121	No. 85-ITC(PN)/67 dated 22nd August 1967.	Do.	Import Policy for Registered Exporters of Plastics.
122	No. 86-ITC(PN)/67 dated 22nd August, 1967.	Do.	List of I.D.A. industries Amendment to.
	No. 87-ITC(PN)/67 dated 22nd August, 1967.	Do.	Issue of bulk actual user licences to co-operative Societies for the requirements of their members—amendment to the Import Trade Control Hand Book of Rules and Procedure, 1967.
	No. 88-ITC(PN)/67 dated 22nd August, 1967.	Do.	Import policy for motor vehicle parts (S. Nos. 293, 295 and 297 IV of the I.T.C. Schedule) for the licencing period April 1967—March, 1968.

ऊपर लिखे असाधारण राजपत्रों की प्रतियां प्रकाशन प्रबन्धक, सिविल लाइन्स, दिल्ली के नाम मांगपत्र भेजने पर भेज दी जाएंगी। मांगपत्र प्रबन्धक के पास इन राजपत्रों के जारी होने की तारीख से दस दिन के भीतर पहुंच जाने चाहिए।

Copies of the *Gazettes Extraordinary* mentioned above will be supplied on Indent to the Manager of Publications, Civil Lines, Delhi. Indents should be submitted so as to reach the Manager within ten days of the date of issue of these Gazettes.

विषय सूची (CONTENTS)

	पृष्ठ (Pages)		पृष्ठ (Pages)
भाग I—खंड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों तथा उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	735	भाग I—खंड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों तथा उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	899

भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं .	—
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं .	681
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम . . .	—
भाग II—खंड 2—विधेयक और विधेयकों सम्बन्धी प्रवर समितियों की रिपोर्ट . .	—
भाग II—खंड 3—उप खंड (1)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं) . . .	14
भाग II—खंड 3—उप-खंड (2)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए आदेश और अधिसूचनाएं . . .	
भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित विधिक नियम और आदेश	11
भाग III—खंड 1—महालेखापरीक्षक, संघ-लोक-सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के संलग्न तथा अधीन कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	659
भाग III—खंड 2—एकस्व कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिसें .	395
भाग III—खंड 3—मुख्य आयुक्तों द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाएं .	141
भाग III—खंड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विविध अधिसूचनाएं जिसमें अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिसें शामिल हैं .	465
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिसें .	151
पूरक सं० 36—	
2 सितम्बर 1967 को समाप्त होने वाले सप्ताह की महामारी सम्बन्धी साप्ताहिक रिपोर्ट .	1487
12 अगस्त 1967 को समाप्त होने वाले सप्ताह के दौरान भारत में 30,000 तथा उससे अधिक आबादी के शहरों में जन्म, तथा बड़ी बीमारियों से हुई मृत्यु से सम्बन्धित आंकड़े .	145

PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations and Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	735
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave, etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	899
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to Non-statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministry of Defence	—
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave, etc. of Officers issued by the Ministry of Defence	681
PART II—SECTION 1.—Acts, Ordinances and Regulations	—
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committees on Bills	—
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules, (including orders, bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) ..	1419
PART II—SECTION 3.—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) ..	3107
PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence	—
PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India	659
PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Offices, Calcutta ..	395
PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	141
PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	465
PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies	151
SUPPLEMENT No. 36—	
Weekly Epidemiological Reports for week-ending 2nd September 1967	1487
Births and Deaths from Principal diseases in towns with a population of 30,000 and over in India during week-ending 12th August 1967—	1457

भाग I—खण्ड 1
PART I—SECTION 1

(रक्षा मंत्रालय को छोड़ कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं

Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court

---

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 26 अगस्त 1967

सं० 79-प्रेज/67—राष्ट्रपति जी जीवन रक्षा पदक वर्ग I, जीवन रक्षा पदक वर्ग II, तथा जीवन रक्षा पदक वर्ग III, जिनके समारम्भ की घोषणा इस सचिवालय की अधिसूचना सं० 45-प्रेज/61, दिनांक 30 सितम्बर 1961 में की गई थी, क्रमश: "सर्वोत्तम जीवन रक्षा पदक", "उत्तम जीवन रक्षा पदक" तथा "जीवन रक्षा पदक" से पुन: नामांकन करते हैं और इनके निमित्त निम्नलिखित नियम बनाते हैं :—

सर्वोत्तम जीवन रक्षा पदक

प्रथम्:— यह पदक "सर्वोत्तम जीवन रक्षा पदक" कहलायेगा। (जिसे इसके पश्चात पदक कहा जायेगा)।

द्वितीय:— पदक सोने का बना गोल आकृति में 3 मिलीमीटर मोटा होगा तथा उसमें अन्दर व बाहर दो उभरे हुए वृत्त होंगे जैसा कि परिशिष्ट मे बने चित्र मे दिखलाया गया है। बाहर के वृत्त का व्यास 58 मिलीमीटर का होगा तथा अन्दर के वृत्त का 50 मिलीमीटर का होगा। उसके ऊपर 22.5 मिलीमीटर लम्बा तथा 12.5 मिलीमीटर चौड़ा एक आयताकार उभार होगा जिसके ऊपर संस्कृत अक्षरों में "मा भैः" अन्तलिखित होगा। उसके नीचे 42.5 मिलीमीटर लम्बा तथा 10 मिलीमीटर चौड़ा एक अन्य उभार होगा जिसमें पदक का नाम हिन्दी में "सर्वोत्तम जीवन रक्षा" अन्तलिखित होगा। इन उभारों के किनारे उभरे होंगे। पदक के सम्मुख भाग में "अभय मुद्रा" में एक हाथ समुद्भूत होगा। हाथ, संस्कृत अक्षर तथा पदक का नाम चमकदार होंगे। पदक की शेष खाली सतह सादी होगी। पीछे की ओर नीचे के उभार में आदर्श वाक्य "सत्यमेव जयते" के साथ मध्य में राज्य चिह्न समुद्भूत होगा। पदक का एक मुद्राकृत प्रतिरूप सुरक्षित रखा जायेगा।

तृतीय :— पदक 32 मिलीमीटर चौड़े लाल रंग के रेशमी रिबन द्वारा वक्षस्थल के बाईं ओर लटकाया जायेगा। उसके प्रत्येक किनारे 4 मिलीमीटर चौड़ी हल्की नीली धारियों के होंगे तथा मध्य में नीचे की ओर 1 मिलीमीटर चौड़ी हरे रंग की एक खड़ी धारी होगी।

लाल, हल्का नीला तथा हरा रंग क्रमश: अग्नि, जल तथा जीवन को प्रदर्शित करेंगे।

चतुर्थ :— जल में डूबते हुए, अग्नि, खानों में रक्षात्मक संक्रियाओं आदि से जीवन की रक्षा करने में रक्षा करने वाले द्वारा प्रदर्शित कार्यवाही अथवा कार्यवाहियों में अपने जीवन के लिये महान संकट की परिस्थितियों में विशिष्ट साहस के लिये यह पदक प्रदान किया जायेगा।

पंचम् :— पदक मरणोपरान्त भी प्रदान किया जा सकता है।

षष्ठ :— पदक राष्ट्रपति जी द्वारा प्रदान किया जायेगा।

सप्तम् :— जिन व्यक्तियों को पदक प्रदान किये जायेंगे उनके नामों की घोषणा भारतीय-राजपत्र में की जायेगी और इनके लिये राष्ट्रपति जी के निदेशानुसार एक रजिस्टर रखा जायेगा।

अष्टम्:— सशस्त्र सेनाओं, पुलिस तथा मान्यता प्राप्त अग्निशमन सेवाओं के अतिरिक्त, जीवन के समस्त क्षेत्र में कार्य करने वाले स्त्री-पुरुषों को अपने सेवा काल में यदि उनके द्वारा यह कार्य किया गया हो, तो वे पदक प्राप्त करने के पात्र होंगे।

नवम् :— यदि पदक प्राप्तकर्ता पुन: ऐसी मानवीय सेवा का कार्य करता है जिसके लिये वह समान पदक प्राप्त करने का पात्र है तो पुन: किये गये ऐसे मानवीय सेवा कार्य के लिये "बार" प्रदान की जायेगी और वह लटकते हुए, पदक के साथ रिबन से लगाई जायेगी तथा ऐसी प्रत्येक सेवा के लिये एक अतिरिक्त "बार" प्रदान की जायेगी और इस प्रकार "बार" अथवा "बारें" मरणोपरान्त भी प्रदान की जा सकती है। ऐसी प्रत्येक "बार" के लिये जब कि वह अलग से पहनी जायेगी, पदक का लघुरूप रिबन के साथ जोड़ा जायेगा।

दशम् :— पदक प्राप्तकर्ता पुन: मानवीय सेवा के लिये "उत्तम जीवन रक्षा पदक" अथवा "जीवन रक्षा पदक" जो भी उपयुक्त हो, प्राप्त करने का पात्र होगा।

ऐसी परिस्थिति में पदक प्राप्त-कर्ता "सर्वोत्तम जीवन रक्षा पदक" के अतिरिक्त पदकों अथवा रिबनों को धारण करने का अधिकारी होगा।

एकादश :— पदक प्राप्तकर्ता द्वारा विशेष अवसरों पर धारण करने वाले पदक का लघुरूप, पदक का आधा होगा तथा कथित लघुरूप का एक मुद्राकृत प्रतिरूप सुरक्षित रखा जायेगा।

द्वादश :— राष्ट्रपति जी किसी भी व्यक्ति को दिये गये पदक को रद्द और लोप कर सकते हैं। ऐसा करने पर उसका नाम रजिस्टर में से काट दिया जायेगा और उस व्यक्ति को पदक वापस करना होगा, किन्तु राष्ट्रपति जी को यह अधिकार होगा कि वह बाद में अपने रद्द और लोप करने के आदेश को वापस लेकर यह पदक पुनः प्रदान कर दें।

अंतिम :— पदक को रद्द करने अथवा पुनः प्रदान करने के प्रत्येक मामले की सूचना भारतीय राज-पत्र में प्रकाशित की जायेगी।

उत्तम जीवन रक्षा पदक

प्रथम :— यह पदक "उत्तम जीवन रक्षा पदक" कहलायेगा। (जिसे इसके पश्चात् पदक कहा जायेगा)।

द्वितीय :— पदक चांदी का बना गोल आकृति में 3 मिलीमीटर मोटा होगा तथा उसमें अन्दर व बाहर दो उभरे हुए वृत्त होंगे, जैसा कि परिशिष्ट में बने चित्र में दिखलाया गया है। बाहर के वृत्त का व्यास 58 मिलीमीटर का होगा तथा अन्दर के वृत्त का 50 मिलीमीटर का होगा। उसमें ऊपर 22.5 मिलीमीटर लम्बा तथा 12.5 मिलीमीटर चौड़ा एक आयताकार उभार होगा जिसके ऊपर संस्कृत अक्षरों में "मा भैः" अन्तर्लिखित होगा। उसके नीचे 42.5 मिलीमीटर लम्बा तथा 10 मिलीमीटर चौड़ा एक अन्य उभार होगा जिसमें पदक का नाम हिन्दी में "उत्तम जीवन रक्षा" अन्तर्लिखित होगा। इन उभारों के किनारे उभरे होंगे। पदक के सम्मुख भाग में "अभय मुद्रा" में एक हाथ समुद्भृत होगा। हाथ, संस्कृत अक्षर तथा पदक का नाम चमकदार होंगे। पदक की शेष खाली सतह सादी होगी। पीछे की ओर नीचे के उभार में आदर्श वाक्य "सत्यमेव जयते" के साथ मध्य में राज्य-चिह्न समुद्भृत होगा। पदक का एक मुद्राकृत प्रतिरूप सुरक्षित रखा जायेगा।

तृतीय :— पदक 32 मिलीमीटर चौड़े लाल रंग के रेशमी रिबन द्वारा वक्षस्थल के बाईं ओर लटकाया जायेगा। उसके किनारे 4 मिलीमीटर चौड़ी हल्की नीली धारियों के होंगे तथा मध्य में 4 मिलीमीटर के अन्तर से 2 मिलीमीटर चौड़ी हरे रंग की दो खड़ी धारियां होंगी।

लाल, हल्का नीला तथा हरा रंग क्रमशः अग्नि जल तथा जीवन को प्रदर्शित करेंगे।

चतुर्थ :— जल में डूबते हुए, अग्नि, खानों में रक्षात्मक संक्रियाओं आदि से जीवन की रक्षा करने में रक्षा करने वाले द्वारा प्रदर्शित कार्यवाही अथवा कार्यवाहियों में अपने जीवन के लिये महान संकट की परिस्थितियों में साहस एवं तत्परता के लिये यह पदक प्रदान किया जायेगा।

पंचम :— पदक मरणोपरान्त भी प्रदान किया जा सकता है।

षष्ठ :— पदक राष्ट्रपति जी द्वारा प्रदान किया जायेगा।

सप्तम :— जिन व्यक्तियों को पदक प्रदान किये जायेंगे उनके नामों की घोषणा भारतीय राजपत्र में की जायेगी और इनके लिये राष्ट्रपति जी के निदेशानुसार एक रजिस्टर रखा जायेगा।

अष्टम :— सशस्त्र सेनाओं, पुलिस तथा मान्यता प्राप्त अग्निशमन सेवाओं के अतिरिक्त, जीवन के समस्त क्षेत्र में कार्य करने वाले स्त्री-पुरुषों को अपने सेवा काल में यदि उनके द्वारा यह कार्य किया गया हो, तो वे पदक प्राप्त करने के पात्र होंगे।

नवम :— यदि पदक प्राप्तकर्ता पुनः ऐसी मानवीय सेवा का कार्य करता है जिसके लिये वह समान पदक प्राप्त करने का पात्र है तो पुनः किये गये ऐसे मानवीय सेवा कार्य के लिये "बार" प्रदान की जायेगी और वह लटकते हुए पदक के साथ रिबन से लगायी जायेगी तथा ऐसी प्रत्येक सेवा के लिये एक अतिरिक्त "बार" प्रदान की जायेगी और इस प्रकार "बार" अथवा "बार" मरणोपरान्त भी प्रदान की जा सकती हैं। ऐसी प्रत्येक "बार" के लिये जब कि वह अलग से पहनी जायेगी, पदक का लघुरूप रिबन के साथ जोड़ा जायेगा।

दशम :— पदक का प्राप्तकर्ता पुनः मानवीय सेवा के लिये "सर्वोत्तम जीवन रक्षा पदक" अथवा "जीवन रक्षा पदक" जो भी उपयुक्त हो, प्राप्त करने का पात्र होगा। ऐसी परिस्थिति में पदक प्राप्तकर्ता "उत्तम जीवन रक्षा पदक" के अतिरिक्त पदकों अथवा रिबनों को धारण करने का अधिकारी होगा।

एकादश :— पदक प्राप्तकर्ता द्वारा विशेष अवसरों पर धारण करने वाले पदक का लघुरूप, पदक का आधा होगा तथा कथित लघुरूप का एक मुद्राकृत प्रतिरूप सुरक्षित रखा जायेगा।

द्वादश: — राष्ट्रपति जी किसी भी व्यक्ति को दिये गये पदक को रद्द और लोप कर सकते हैं। ऐसा करने पर उसका नाम रजिस्टर में से काट दिया जायेगा और उस व्यक्ति को पदक वापस करना होगा, किन्तु राष्ट्रपति जी को यह अधिकार होगा कि वह बाद में अपने रद्द और लोप करने के आदेश को वापस लेकर यह पदक पुन: प्रदान कर दें।

अंतिम. — पदक के रद्द करने अथवा पुन: प्रदान करने के प्रत्येक मामले की सूचना भारतीय राजपत्र में प्रकाशित की जायेगी।

जीवन रक्षा पदक

प्रथम — यह पदक "जीवन रक्षा पदक" कहलायेगा। (जिसे इसके पश्चात् पदक कहा जायेगा)।

द्वितीय. — पदक कांस्य का बना गोल आकृति में 3 मिलीमीटर मोटा होगा तथा उसमें अन्दर व बाहर दो उभरे हुए वृत्त होंगे, जैसा कि परिशिष्ट में बने चित्र में दिखलाया गया है। बाहर के वृत्त का व्यास 58 मिलीमीटर का होगा तथा अन्दर के वृत्त का 50 मिलीमीटर का होगा। उसके ऊपर 22.5 मिलीमीटर लम्बा तथा 12.5 मिलीमीटर चौड़ा एक आयताकार उभार होगा जिसके ऊपर सम्कृत अक्षरों में "मा भै" अन्तर्लिखित होगा। उसके नीचे 42.5 मिलीमीटर लम्बा तथा 10 मिलीमीटर चौड़ा एक अन्य उभार होगा जिसमें पदक का नाम हिन्दी में "जीवन रक्षा" अन्तर्लिखित होगा। इन उभारों के किनारे उभरे होंगे। पदक के सम्मुख भाग में 'अभय मुद्रा' में एक हाथ समुद्भूत होगा। हाथ, संस्कृत अक्षर तथा पदक का नाम चमकदार होंगे। पदक की शेष खाली सतह सादी होगी। पीछे की ओर नीचे के उभार में आदर्श वाक्य 'सत्यमेव जयते' के साथ मध्य में राज्य-चिह्न समुद्भूत होगा। पदक का एक मुद्रांकन प्रतिरूप सुरक्षित रखा जायेगा।

तृतीय — पदक 32 मिलीमीटर चौड़े लाल रंग के रेशमी रिबन द्वारा वक्षस्थल के बाईं ओर लटकाया जायेगा। उसके प्रत्येक किनारे 4 मिलीमीटर चौड़ी हल्की नीली धारियों के होंगे तथा मध्य में 3½ मिलीमीटर के अन्तर से 1 मिलीमीटर चौड़ी हरे रंग की तीन खड़ी धारियां होंगी।

लाल, हल्का नीला तथा हरा रंग क्रमश: अग्नि, जल तथा जीवन को प्रदर्शित करेंगे।

चतुर्थ. — जल में डूबते हुए, अग्नि, खानों में रक्षात्मक संक्रियाओं आदि से जीवन की रक्षा करने में रक्षा करने वाले द्वारा प्रदर्शित कार्यवाही अथवा कार्यवाहियों में गम्भीर शारीरिक चोट के लिये महान संकट की परिस्थितियों में साहस एवं तत्परता के लिये यह पदक प्रदान किया जायेगा।

पंचम — पदक मरणोपरान्त भी प्रदान किया जा सकता है।

षष्ठ — पदक राष्ट्रपति जी द्वारा प्रदान किया जायेगा।

सप्तम — जिन व्यक्तियों को पदक प्रदान किये जायेंगे उनके नामों की घोषणा भारतीय राजपत्र में की जायेगी और इनके लिये राष्ट्रपति जी के निदेशानुसार एक रजिस्टर रखा जायेगा।

अष्टम् — सशस्त्र सेनाओं, पुलिस तथा मान्यता प्राप्त अग्निशमन सेवाओं के अतिरिक्त, जीवन के समस्त क्षेत्र में कार्य करने वाले स्त्री-पुरुषों को अपने सेवा काल में यदि उनके द्वारा यह कार्य किया गया हो, तो वे पदक प्राप्त करने के पात्र होंगे।

नवम्: — यदि पदक प्राप्तकर्त्ता पुन: ऐसी मानवीय सेवा का कार्य करता है जिसके लिये वह समान पदक प्राप्त करने का पात्र है तो पुन: किये गये ऐसे मानवीय सेवा कार्य के लिये "बार" प्रदान की जायेगी और वह लटकते हुए पदक के साथ रिबन से लगायी जायेगी तथा ऐसी प्रत्येक सेवा के लिये एक अतिरिक्त "बार" प्रदान की जायेगी और इस प्रकार "बार" अथवा "बारें" मरणोपरान्त भी प्रदान की जा सकती हैं। ऐसी प्रत्येक "बार" के लिये जब कि वह अलग से पहनी जायेगी, पदक का लघुरूप रिबन के साथ जोड़ा जायेगा।

दशम् — पदक प्राप्तकर्त्ता पुन: मानवीय सेवा के लिये "सर्वोत्तम जीवन रक्षा पदक" अथवा 'उत्तम जीवन रक्षा पदक" जो भी उपयुक्त हो प्राप्त करने का पात्र होगा। ऐसी परिस्थिति में पदक प्राप्तकर्त्ता "जीवन रक्षा पदक" के अतिरिक्त पदकों अथवा रिबनों को धारण करने का अधिकारी होगा।

एकादश — पदक प्राप्तकर्त्ता द्वारा विशेष अवसरों पर धारण करने वाले पदक का लघुरूप पदक का आधा होगा तथा कथित लघुरूप का एक मुद्रांकन प्रतिरूप सुरक्षित रखा जायेगा।

द्वादश — राष्ट्रपति जी किसी भी व्यक्ति को दिये गये पदक को रद्द और लोप कर सकते हैं। ऐसा करने पर उसका नाम रजिस्टर में से काट दिया जायेगा और उस व्यक्ति को पदक वापस करना होगा, किन्तु राष्ट्रपति जी को यह अधिकार होगा कि वह बाद में अपने रद्द और लोप करने के आदेश को वापस लेकर यह पदक पुन: प्रदान कर दें।

अन्तिम: — पदक के रद्द करने अथवा पुनः प्रदान करने के प्रत्येक मामले की सूचना भारतीय राजपत्र में प्रकाशित की जायेगी ।

परिशिष्ट

सर्वोत्तम जीवन रक्षा पदक

सम्मुख पिछला

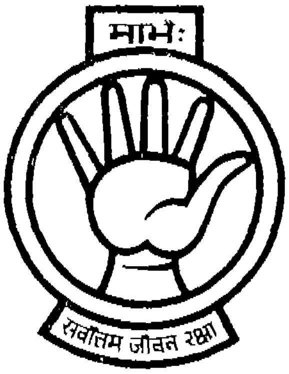

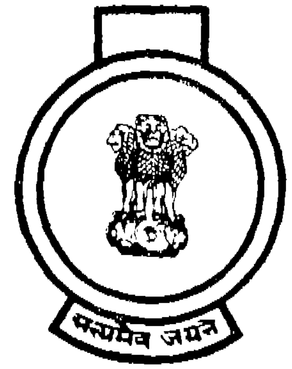

उत्तम जीवन रक्षा पदक

सम्मुख पिछला

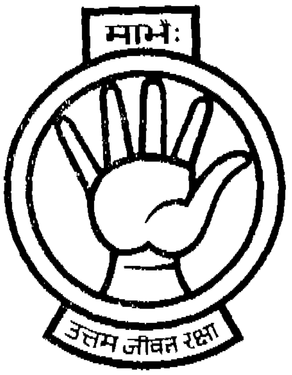

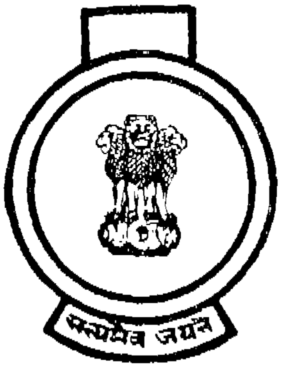

जीवन रक्षा पदक

सम्मुख पिछला

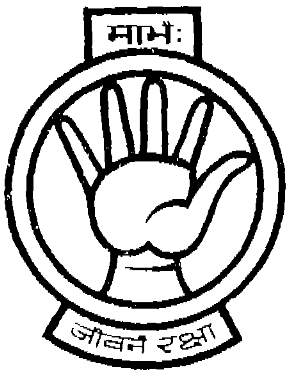

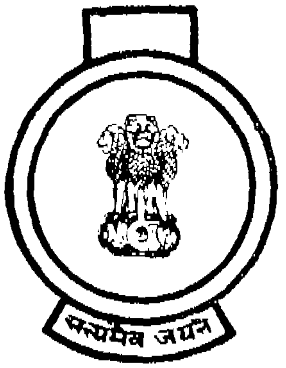

दिनांक 31 अगस्त 1967

सं० 81-प्रेज/67—राष्ट्रपति, सीमा सुरक्षा दल के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिये राष्ट्रपति का पुलिस तथा अग्निशमन सेवा पदक प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री बिलोचन प्रसाद शर्मा,
कान्स्टेबल सं० 1110,
3री बटालियन, पश्चिम बंगाल राइफल्स,
बैरकपुर । **(स्वर्गीय)**

सेवाओं का विवरण जिनके लिये पदक प्रदान किया गया ।

11 अक्तूबर, 1965 को पश्चिम बंगाल में नदिया जिले में स्थित मौजा बेनाई क्षेत्र में पाकिस्तानी सेनाओं ने बिना किसी कारण के एक छोटे सीमा गश्ती दल पर तीन दिशाओं से भारी एवं केन्द्रित गोलीबारी शुरू कर दी । छोटे दल ने दृढ़ता से इस भयंकर घातक आक्रमण का सामना किया और संख्या में अधिक शत्रु से वीरता से लड़ा । जब दल के पास युद्ध-सामग्री कम हो रही थी तो कान्स्टेबल बिलोचन प्रसाद शर्मा ने स्वयं को चौकी की ओर तुरन्त जाने और वहां से कुमुक प्राप्त करने के लिए समर्पित किया । ऐसा करने के लिये पाकिस्तानी सेनाओं द्वारा की जा रही भारी गोलीबारी के सामने से खुले मैदान से होकर जाना पड़ता था । खतरे की परवाह न कर कान्स्टेबल शर्मा लपक कर खुले मैदान के पार गया और चौकी पर पहुंच कर दल पर आक्रमण की सूचना दी । उसने तब भारी मात्रा में युद्ध-सामग्री ली और वापिस दौड़ा । ऐसा करते हुए उसके पेट में शत्रु की एक गोली लगी किन्तु गहरे घाव के बावजूद वह दल तक पहुंच गया और अपने मिशन में सफल हुआ । तुरन्त बाद कुमुक पहुंच गई और पाकिस्तानी गोलीबारी को खामोश कर दिया । जख्मी कान्स्टेबल को अस्पताल ले जाया गया जहां घावों के कारण दूसरे दिन उसकी मृत्यु हो गई ।

कान्स्टेबल बिलोचन प्रसाद शर्मा ने विशिष्ट वीरता, सहनशक्ति और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया और कर्तव्य पालन करते हुए अपने जीवन का बलिदान दे दिया ।

2. यह पदक राष्ट्रपति के पुलिस तथा अग्निशमन सेवा पदक नियमावली के नियम 4(i) के अन्तर्गत वीरता के लिये दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 11 अक्तूबर, 1965 से दिया जायेगा ।

नागेन्द्र सिंह, राष्ट्रपति के सचिव

नई दिल्ली, दिनांक 30 अगस्त 1967

सं० 80-प्रेज/67—**शुद्धि-पत्र**—दिनांक 5 नवम्बर, 1966 के भारतीय राजपत्र के भाग I, अनुभाग 1 में प्रकाशित इस सचिवालय की अधिसूचना सं० 76-प्रेज/66, दिनांक 27 अक्तूबर, 1966 में शुद्धि करने हेतु :—

पृष्ठ 720 पर

क्रम संख्या 277 में

वास्ते "6246437 नायक पी० केलन"

पढ़ें "6246434 नायक पी० केलन"

व० जे० मोर, राष्ट्रपति के उपसचिव

औद्योगिक विकास तथा समवाय कार्य मंत्रालय

(औद्योगिक विकास विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 23 अगस्त 1967

संकल्प

सं० 16(10)/64-ई० आई० (एस०)—भूतपूर्व इस्पात, खान तथा भारी इंजीनियरी मंत्रालय के इसी संख्या वाले संकल्प दिनांक 16 अप्रैल 1964 में, जैसा कि समय-समय पर संशोधित किया गया, निम्नलिखित और आगे संशोधित किया जाता है :—

भारत सरकार के इसी संख्या वाले संकल्प दिनांक 18 दिसम्बर 1965 के क्रम संख्या 3 पर विद्यमान प्रविष्टि जो इस प्रकार है :—

"श्री जे० एस० माथुर,
अतिरिक्त महानिदेशक,
पूर्ति तथा निपटान,
पूर्ति तथा निपटान का महानिदेशालय,
नई दिल्ली।"

के स्थान पर निम्नलिखित रख दिया जाये:—

"श्री पी० एस० गुप्त,
अतिरिक्त महानिदेशक,
पूर्ति तथा निपटान,
पूर्ति तथा निपटान का महानिदेशालय,
नई दिल्ली।"

आदेश

आदेश दिया गया कि संकल्प की एक प्रति भारत का राजपत्र में प्रकाशित कराई जाये।

आर० वी० सुब्रह्मण्यन, संयुक्त सचिव

शिक्षा मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 16 अगस्त 1967

सं० एफ० 22/10/67-सी० ए० 1(2)—इस मंत्रालय की अधिसूचना सं० एफ० 22/10/67-सी० ए० 1(2) दिनांक 7 जुलाई के क्रम में डा० विशेश्वर प्रसाद, 12 केवलरी लाइन्स, दिल्ली-6 को, आयोग के संविधान के पैराग्राफ 3 आई० बी० के अन्तर्गत 3 अप्रैल 1971 को समाप्त होने वाली अवधि के बचे हुए समय के लिये भारतीय ऐतिहासिक अभिलेख आयोग के संवादी सदस्य के रूप में नियुक्त किया जाता है।

ए० एस० तलवार, अवर सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th August 1967

No. 79-Pres./67.—The President is pleased to rename the JEEVAN RAKSHA PADAK CLASS I, JEEVAN RAKSHA PADAK CLASS II and JEEVAN RAKSHA PADAK CLASS III, the institution of which was notified in this Secretariat Notification No. 45-Pres./61, dated the 30th September, 1961, as the "SARVOTTAM JEEVAN RAKSHA PADAK", "UTTAM JEEVAN RAKSHA PADAK" and "JEEVAN RAKSHA PADAK" respectively, and, in this behalf, to make the following regulations :—

SARVOTTAM JEEVAN RAKSHA PADAK

Firstly.—The medal shall be styled and designated the "SARVOTTAM JEEVAN RAKSHA PADAK" (hereinafter referred to as the medal).

Secondly.—The medal shall be circular in shape, made of gold, 3 mm. in thickness, and shall consist of two raised circles, inner and outer, as in the representative drawings in the annexure. The diameter of the outer circle shall be 58 mm. and of the inner circle 50 mm. At the top there shall be a rectangular projection 22.5 mm. in length and 12.5 mm. in width on which shall be embossed the Sanskrit letters "मा भैः" At the bottom there shall be another projection 42.5 mm. in length and 10 mm. in width embossed with the name of the medal 'Sarvottam Jeevan Raksha' in Hindi. The edges of these projections shall be raised. On the obverse of the medal shall be embossed in the centre a hand in the "Abhai Mudra". The hand, the Sanskrit letters and the name of the medal shall be burnished. The remaining surface of the medal shall be toned to constitute a plain background. On the reverse shall be embossed the State Emblem in the centre with the motto "सत्यमेव जयते" in the lower projection. A sealed pattern of the decoration shall be deposited and kept.

Thirdly.—The medal shall be suspended from the left breast by a red coloured silk riband 32 mm in width, edged with light blue stripes each 4 mm. wide and with one green vertical stripe, 1 mm. in width, down the centre.

The colours red, light blue and green denote fire, water and life respectively.

Fourthly.—The medal shall be awarded for conspicuous courage, under circumstances of very great danger to the life of the rescuer displayed in an act or a series of acts of a human nature in saving life from drowning, fire, rescue operations in mines, etc.

Fifthly.—The medal may be awarded posthumously.

Sixthly.—The decoration shall be conferred by the President.

Seventhly.—The names of those persons upon whom the decoration may be conferred, shall be published in the Gazette of India, and a Register thereof maintained under the direction of the President.

Eighthly.—Persons of either sex in all walks of life, other than the members of the Armed Forces, Police Forces and of recognised Fire Services, if the act is performed by them in the course of duty, shall be eligible for the award.

Ninthly.—If a recipient of the medal shall again perform such an act of humane service as would have made him or her eligible to receive the same medal such further act of humane service shall be recognised by a Bar to be attached to the riband by which the medal is suspended and, for every subsequent act of humane service, an additional Bar shall be added and such Bar or Bars may also be awarded posthumously. For every such Bar, a replica of the medal in miniature shall be added to the riband when worn alone.

Tenthly.—A recipient of the medal shall be eligible for the award of the "Uttam Jeevan Raksha Padak" or the "Jeevan Raksha Padak", as may be appropriate, for further acts of humane service. In such event, the recipient shall be entitled to wear those medals and or ribands, in addition to the "Sarvottam Jeevan Raksha Padak".

Eleventhly.—The miniature medal which may be worn on certain occasions by recipients shall be half the size of the medal, and a sealed pattern of the said miniature medal shall be deposited and kept.

Twelfthly.—The President may cancel and annul the award of the medal to any person and thereupon the name of such recipient in the Register shall be erased and the recipient shall be required to surrender the insignia; but it shall be competent for the President to restore the decoration subsequently when such cancellation and annulment has been withdrawn.

Lastly.—The notice of cancellation or restoration in every case shall be published in the *Gazette of India*.

UTTAM JEEVAN RAKSHA PADAK

Firstly.—The medal shall be styled and designated the "UTTAM JEEVAN RAKSHA PADAK" (hereinafter referred to as the medal).

Secondly.—The medal shall be circular in shape, made of silver, 3 mm. in thickness, and shall consist of two raised circles, inner and outer, as in the representative drawings in the annexure. The diameter of the outer circle shall be 58 mm. and of the inner circle 50 mm. At the top there shall be a rectangular projection 22.5 mm. in length and 12.5 mm. in width on which shall be embossed the Sanskrit letters "मा भैः" At the bottom there shall be another projection 42.5 mm. in length and 10 mm. in width embossed with the name of the medal "Uttam Jeevan Raksha" in Hindi. The edges of these projections shall be raised.

On the obverse of the medal shall be embossed in the centre a hand in the "Abhai Mudra". The hand, the Sanskrit letters and the name of the medal shall be burnished. The remaining surface of the medal shall be toned to constitute a plain background. On the reverse shall be embossed the State Emblem in the centre with the motto 'सत्यमेव जयते' in the lower projection. A sealed pattern of the decoration shall be deposited and kept.

Thirdly.—The medal shall be suspended from the left breast by a red coloured silk riband 32 mm. in width, edged with light blue stripes each 4 mm. width and with two green vertical stripes, each 1 mm. wide and 4 mm. apart in the centre.

The colours red, light blue and green denote fire, water and life respectively.

Fourthly.—The medal shall be awarded for courage and promptitude under circumstances of great danger to the life of the rescuer displayed in an act or a series of acts of a humane nature in saving life from drowning, fire, rescue operations in mines, etc.

Fifthly.—The medal may be awarded posthumously.

Sixthly.—The decoration shall be conferred by the President.

Seventhly.—The names of those persons upon whom the decoration may be conferred, shall be published in the Gazette of India, and a Register thereof maintained under the direction of the President.

Eighthly.—Persons of either sex in all walks of life, other than the members of the Armed Forces, Police Forces and of recognised Fire Services, if the act is performed by them in the course of duty, shall be eligible for the award.

Ninthly.—If a recipient of the medal shall again perform such an act of humane service as would have made him or her eligible to receive the same medal such further act of humane service shall be recognised by a Bar to be attached to the riband by which the medal is suspended and, for every subsequent act of humane service, an additional Bar shall be added and such Bar or Bars may also be awarded posthumously. For every such Bar, a replica of the medal in miniature shall be added to the riband when worn alone.

Tenthly.—A recipient of the Medal shall be eligible for the award of the "Sarvottam Jeevan Raksha Padak" or the "Jeevan Raksha Padak" as may be appropriate, for further acts of humane service. In such event, the recipient shall be entitled to wear those medals and or ribands, in addition to the "Uttam Jeevan Raksha Padak".

Eleventhly.—The miniature medal which may be worn on certain occasions by recipients shall be half the size of the medal, and a sealed pattern of the said miniature medal shall be deposited and kept.

Twelfthly.—The President may cancel and annul the award of the medal to any person and thereupon the name of such recipient in the Register shall be erased and the recipient shall be required to surrender the insignia; but it shall be competent for the President to restore the decoration subsequently when such cancellation and annulment has been withdrawn.

Lastly.—The notice of cancellation or restoration in every case shall be published in the *Gazette of India.*

JEEVAN RAKSHA PADAK

Firstly.—The medal shall be styled and designated the "JEEVAN RAKSHA PADAK" (hereinafter referred to as the medal).

Secondly.—The medal shall be circular in shape, made of bronze, 3 mm. in thickness, and shall consist of two raised circles, inner and outer, as in the representative drawings in the annexure. The diameter of the outer circle shall be 58 mm. and of the inner circle 50 mm. At the top there shall be a rectangular projection 22.5 mm. in length and 12.5 mm. in width on which shall be embossed the Sanskrit letters "मा भैः" At the bottom there shall be another projection 42.5 mm. in the length and 10 mm. in width embossed with the name of the medal "Jeevan Raksha" in Hindi. The edges of these projections shall be raised. On the obverse of the medal shall be embossed in the centre a hand in the "Abhai Mudra". The hand, the Sanskrit letters and the name of the medal shall be burnished. The remaining surface of the medal shall be toned to constitute a plain background. On the reverse shall be embossed the State Emblem in the centre with the motto "सत्यमेव जयते" in the lower projection. A sealed pattern of the decoration shall be deposited and kept.

Thirdly.—The medal shall be suspended from the left breast by a red coloured silk riband 32 mm. in width, edged with light blue stripes each 4 mm. wide and with three green vertical stripes, each 1 mm. wide and 3½ mm. apart, in the centre.

The colours red, light blue and green denote fire, water and life respectively.

Fourthly.—he medal shall be awarded for courage and promptitude in savings life under circumstances of grave bodily injury to the rescuer displayed in an act or a series of acts of a humane nature in saving life from drowning, fire, rescue operations in mines, etc.

Fifthly.—The medal may be awarded posthumously.

Sixthly.—The decoration shall be conferred by the President.

Seventhly.—The names of those persons upon whom the decoration may be conferred, shall be published in the Gazette of India, and a Register thereof maintained under the direction of the President.

Eighthly.—Persons of either sex in all walks of life, other than the members of the Armed Forces, Police Forces and of recognised Fire Services, if the act is performed by them in the course of duty, shall be eligible for the award.

Ninthly.—If a recipient of the medal shall again perform such an act of humane service as would have made him or her eligible to receive the same medal such further act of humane service shall be recognised by a Bar to be attached to the riband by which the medal is suspended and for every subsequent act of humane service, an additional Bar shall be added and such Bar and Bars may also be awarded posthumously. For every such Bar, a replica of the medal in miniature shall be added to the riband when worn alone.

Tenthly.—A recipient of the medal shall be eligible for the award of the "Sarvottam Jeevan Raksha Padak" or the "Uttam Jeevan Raksha Padak", as may be appropriate, for further acts of humane service. In such event, the recipient shall be entitled to wear those medals and or ribands, in addition to the "Jeevan Raksha Padak".

Eleventhly.—The miniature medal which may be worn on certain occasions by recipients shall be half the size of the medal, and a sealed pattern of the said miniature medal shall be deposited and kept.

Twelfthly.—The President may cancel and annul the award of the medal to any person and thereupon the name of such recipient in the Register shall be erased and the recipient shall be required to surrender the insignia; but it shall be competent for the President to restore the decoration subsequently when such cancellation and annulment has been withdrawn.

Lastly.—The notice of cancellation or restoration in every case shall be published in the *Gazette of India*

ANNEXURE

SARVOTTAM JEEVAN RAKSHA PADAK

OBVERSE REVERSE

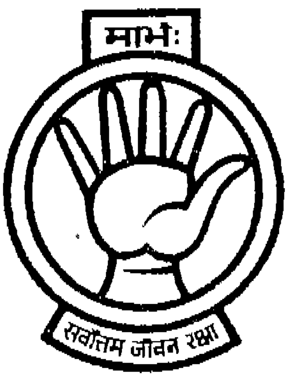

UTTAM JEEVAN RAKSHA PADAK

OBVERSE REVERSE

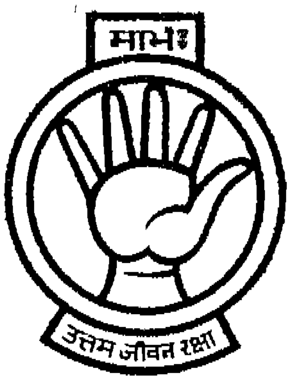

JEEVAN RAKSHA PADAK

OBVERSE REVERSE

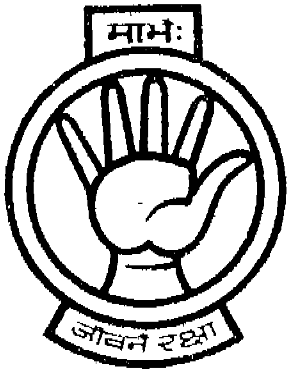

New Delhi, the 31st August 1967

No. 81-Pres./67.—The President is pleased to award the President's Police and Fire Services Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Border Security Force :—

Name of the officer and rank

Shri Belochan Prosad Sarma,
Constable No. 1110,
3rd Battalion, West Bengal Rifles,
Barrackpore. *(Deceased)*

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On the 11th October, 1965, without any provocation Pakistani forces opened heavy and concentrated fire from three directions on a small border patrol party in the Mauza Betai area of Nadia District, West Bengal. The small patrol faced this onslaught with determination and vigorously fought the numerically superior opposition. When the patrol was running short of ammunition, Constable Belochan Prosad Sarma volunteered to dash to the outpost and get reinforcements. This involved crossing open ground under intense fire from the Pakistani forces. Unmindful the danger, Constable Sarma dashed across the open area and reached the outpost and reported the attack on the patrol. He then picked up a heavy load of ammunition and rushed back. While doing so, he was hit by a bullet in the abdomen, but despite his grave injury he forced his way back to the patrol and succeeded in his mission. Soon after the reinforcements arrived and the Pakistani firing was silenced. The injured Constable was removed to hospital where, however, he succumbed to his injuries the next day.

Constable Belochan Prosad Sarma exhibited conspicuous gallantry, initiative and devotion to duty in the performance of which he laid down his life.

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the President's Police and Fire Services Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 11th October, 1965.

NAGENDRA SINGH, Secy. to the President

New Delhi, the 30th August 1967

No. 80-Pres./67.—Corrigendum—In this Secretariat Notification No. 76-Pres./66, dated the 27th October, 1966, published in Part I, Section 1 of the Gazette of India dated the 5th November, 1966 :——

On page 732

Serial No. 277

For "6246437 Naik P. KELAN"

Read "6246434 Naik P. KELAN"

V. J. MOORE, Dy. Secy. to the President.

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

New Delhi-1, the 14th August 1967

No. 26/13/67-*ANL*.—The President is pleased to re-nominate Rani Lakshmi of Nancowrie to the Advisory Committee in respect of the Union Territory of Andaman and Nicobar Islands associated with the Chief Commissioner of the Islands, whose term expired on the 31st March, 1967.

2. The term of Rani Lakshmi will expire on the 31st March, 1968.

A. D. PANDE, Jt. Secy.

New Delhi-1, the 16th August 1967

ADDENDUM

No. 18/17/67-*DII(S)*.—In continuation of this Ministry's Addendum No. 18/4/65-DII(S), dated the 24th June, 1965, the Government of India have decided that the exemption granted to two students each from the Union Territories of Andaman and Nicobars and Laccadives, Minicoy and Amindivi Islands from appearing in the Entrance Examination and the age relaxation for admission to Sainik Schools has been extended for a further period of two years with effect from the next session commencing in January 1968. The exemption should apply to tribal students only.

B. C. PARIJA, Dy. Secy.

New Delhi, the 26th August 1967

No. 17/11/66-Poll. I(A)——The following statement showing the number of persons in detention under the Preventive

Detention Act, 1950 (4 of 1950) in various States as on the 31st December, 1966, is published for general information.

Name of the State	Number of persons in detention under the Preventive Detention Act, 1950 on the 31st December 1966					
	Detained under section 3(1)(a) Clauses				De-tained under Sec-tion 3(1)(b)	Grand Total
	(i)	(ii)	(iii)	Total of colu-mns 2-4		
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)
1. Andhra Pradesh	—	—	—	—	—	—
2. Assam ..	—	—	—	—	—	—
3. Bihar	—	—	—	—	—	
4. Gujarat	—	—	—	—	—	—
5. Haryana . ..	—	—	—	—	—	—
6. Kerala	—	—	—	—	—	—
7. Madhya Pradesh	—	15	—	15	—	15
8. Madras	—	—	—	—	—	—
9. Maharashtra .	—	3	—	3	—	3
10. Mysore	—	—	—	—	—	—
11. Orissa . ..	—	—	—	—	—	—
12. Punjab .. .	—	—	—	—	—	—
13. Rajasthan ..	—	3	—	3	—	3
14. Uttar Pradesh ..	—	9	—	9	—	9
15. West Bengal ..	—	157	4	161	—	161
16. Delhi	—	3	—	3	—	3
17. Himachal Pradesh	—	—	—	—	—	—
18. Manipur ..	—	—	—	—	—	—
19. Tripura	—	—	—	—	—	—
20. Nagaland ..	—	—	—	—	—	—
21. Nefa	—	—	—	—	—	—
22. Chandigarh ..	—	—	—	—	—	—
23. Pondicherry ..	—	—	—	—	—	—
TOTAL	—	190	4	194	—	194

G. K. Arora, Deputy Secy.

MINISTRY OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT AND COMPANY AFFAIRS

(Department of Industrial Development)

RESOLUTION

New Delhi, the 23rd August 1967

No. 16(10)/64-*EI(M)*.—In the erstwhile Ministry of Steel, Mines and Heavy Engineering Resolution of even number dated the 16th April, 1964, as amended from time to time, the following further amendment is made:

The existing entry at S. No. 3 of Government of India's Resolution of even number dated the 18th December, 1965 which reads as:

"Shri J. S. Mathur,
Additional Director General of Supplies & Disposals,
Directorate General of Supplies & Disposals,
New Delhi'.

may be *substituted* by the following:

"Shri P. S. Gupta,
Additional Director General of Supplies & Disposals,
Directorate General of Supplies & Disposals,
New Delhi".

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be published in the Gazette of India

R. V. SUBRAHMANIAN, Jt. Secy.

MINISTRY OF EDUCATION

New Delhi, the 16th August 1967

No. F. 22/10/67-*CAI*(2).—In continuation of this Ministry's Notification No. F. 22/10/67-CAI(2), dated the 7th July, Dr Bisheshwar Prasad, 12-Cavalary Lines, Delhi-6, is appointed as Corresponding Member of the Indian Historical Records Commission, for the unexpired portion of the term expiring on the 3rd April, 1971, under para 3.I.B. of the Constitution of the Commission.

A. S. TALWAR, Under Secy.

(Cultural Activities Division No. 1)

RESOLUTION

New Delhi, the 21st August 1967

SUBJECT:—*Central Advisory Board of Archaeology—Extension of term.*

No. 11/1/67-*CAI*(1).—The Government of India have decided that the Central Advisory Board of Archaeology set up, *vide* the Government of India, Ministry of Education, Resolution No. F. 11-3/64-C.1, dated the 9th April, 1964, shall continue, as at present constituted, for a further period of five months from the 1st August 1967 to 31st December 1967.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all concerned.

A. M. D'ROZARIO, Jt. Secy.

MINISTRY OF IRRIGATION AND POWER

RESOLUTION

New Delhi, the 23rd August 1967

No. 1(4)/67-*Policy*.—The "Co-ordination Committee of Irrigation and Power Seminar" and the "Co-ordination Board of Ministers", set up under the Government of India, Ministry of Irrigation and Power, Resolution No. 24(2)/54-Adm., dated the 13th October, 1954, and re-constituted under Resolution No. 1(1)/60-Policy, dated the 10th November, 1961, are hereby abolished with immediate effect.

K. G. R. IYER, Jt. Secy

MINISTRY OF LABOUR EMPLOYMENT & REHABILITATION

(Deptt. of Labour and Employment)

RESOLUTION

New Delhi, the 24th August 1967

No. 36/37/66-*I&E*.—In further modification of the Ministry of Labour, Employment and Rehabilitation (Department of Labour and Employment) Resolution No. 36/14/66-I&E dated December 24, 1966, Shri Bhaskar Mitter is appointed as a member of the National Commission on Labour *vice* Late Shri N. K. Jalan.

ORDER

ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India, Part I, Section 1.

ORDERED also that a copy of the Resolution be communicated to all Ministries/Departments of the Government of India/State Governments/Administrations of Union Territories and all others concerned.

R. L. MEHTA, Additional Secy

PRINTED IN INDIA BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD AND PUBLISHED BY THE MANAGER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1967